अपनों से अपनी बात-

परिदृश्य : शताब्दी वर्ष २०११-२०१२

शताब्दी वर्ष की उलटी गिनती अब समाप्त-४८

अब मात्र गिनी-चुनी ३८ दिन की अवधि शेष

असमंजस की वेला गई, कमर कसकर खड़े हो जाएँ

आइए! डालें शताब्दी वर्ष के आयोजनों पर एक दृष्टि!

प्रारम्भिक टिप्पणी

चार वर्ष से चल रही इस उलटी गिनती की यह समापन कड़ी है। अगले माह फरवरी २०११ से शताब्दी वर्ष आयोजन की प्रक्रिया आरंभ हो जाएगी। यह प्रक्रिया १२ माह तक चलने वाली जन्मशताब्दी आयोजनरूपी याज एवं फिर २४ माह तक (२०१४ के वसंत पर्व तक) चलने वाले अनुयाज के रूप में सम्पन्न होगी। अब तो महोत्सव ही आरंभ होने जा रहा है। यह सारा वर्ष समर्पित है शताब्दी पुरुष को याद करने को, उनके विचारों को दिग्-दिगन्त तक पहुँचाने की प्रक्रिया का, उन्हें पावन श्रद्धाञ्जलि देने को। इस वर्ष का वसंत इसीलिए अति विशेष है। शताब्दी वसंत की पूर्व वेला में आइए दुहरा लें, इस वर्ष हम क्या-क्या करने जा रहे हैं।

अ. ज्योति जनवरी २०११

(१) राष्ट्र जागरण दीपयज्ञों में भागीदारी-सारे देश में इन दिनों इन दीपयज्ञों की श्रृंखला एक साथ सम्पन्न हो रही है। यह क्रम मार्च २०११ माह तक चलता रहेगा। परम पूज्य गुरुदेव ने कम से कम दो करोड़ प्रज्ञा परिजनों तथा दो लाख प्रज्ञा पुत्रों की माँग की है। हमें व्यक्तिगत एवं सामूहिक स्तर पर यह निश्चित करना है कि हम इस प्रक्रिया के प्रयाजक्रम में कितना कुछ कर सके। जो इन दिनों गुरुसत्ता के लिए जो उनकी अपेक्षा है, उसके अनुरूप कर सकेगा, गुरुसत्ता के अनुदान भी उस पर अनवरत बरसते रहेंगे। राष्ट्र जागरण दीपयज्ञों से वही मंथन किया जा रहा है। केन्द्रीय टोलियाँ ये आयोजन कर रही हैं, पर इतना पुरुषार्थ पर्याप्त नहीं है। विद्या-विस्तार यज्ञों की तरह उसके लिए क्षेत्रीय टोलियाँ सक्रिय हों। सक्षम समयदानी खोजे जायें। राष्ट्र जागरण से आशय है समग्र नवनिर्माण हेतु जन-जन को मोहनिशा से जगाना एवं राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य हेतु प्रेरित करना। ये **दीपयज्ञ आध्यात्मिक आंदोलन की भूमिका तो निभाते ही हैं**, इनके साथ जुड़ी सप्तक्रांतियाँ समाज के नवनिर्माण की प्रखर भूमिका संपन्न करती हैं।

परिजन क्या करें- आप इसमें जिस स्तर पर जुड़ सकते हैं, जुड़ें एवं औरों को जोड़ सकते हैं, जोड़ें। जन-जन की इनमें भागीदारी कराएँ। साधक नागरिक-महान् राष्ट्र, शिक्षित नागरिक-श्रेष्ठ राष्ट्र, स्वस्थ नागरिक-सबल राष्ट्र, स्वावलम्बी नागरिक-संपन्न राष्ट्र, स्वच्छ पर्यावरण-सुखी राष्ट्र, व्यसन मुक्त नागरिक-सभ्य राष्ट्र, कुरीति मुक्त समाज-प्रगतिशील राष्ट्र, जाग्रत नारी-समर्थ राष्ट्र- यह हमारे सातों आंदोलनों की फलश्रुतियाँ हैं। प्रबुद्ध वर्ग से लेकर हर जातीय समूह, वर्ग-संगठन की इनमें भागीदारी कराएँ। सभी नहीं, एक या दो आंदोलन लिए जा सकते हैं। कई समूह मिलकर क्षेत्र-विशेष में सातों आंदोलनों को गति दे सकते हैं।

(२) शताब्दी वसंत- (क्षेत्रीय कार्यक्रम) इस बार का वसंत पर्व पूरे देश-विदेश में **६, ७, ८ फरवरी (रविवार से मंगलवार तक) एक साथ मनाया जाएगा।** बड़े महानगरों में रविवार की अनुकूलता के कारण, यही कारण विदेश पर भी लागू होने के कारण इस वर्ष का वसंत पर्व तीन दिन का है। इसी के साथ जन्म शताब्दी आयोजन की श्रृंखला आरंभ हो जाएगी। यों तो प्रयाज प्रक्रिया पहले से गतिशील है, राष्ट्र जागरण दीपयज्ञ और पुस्तक मेले सारे क्षेत्र में चल रहे हैं, पर उत्साह एक फरवरी से ही बन जाना चाहिए। पूरे देश में ६ फरवरी को प्रभात फेरियाँ निकलें, कलश यात्राएँ—शोभा यात्राएँ निकलें एवं शाम को अपने पास जो भी सुविधा हो-हॉल, मन्दिर का सभागृह, कोई अन्य स्थान, प्रज्ञामण्डल का कार्यालय-वहाँ ज्ञानमंच का आयोजन हो। सभी परिजन समूह रूप में कहीं न कहीं भागीदारी अवश्य करें। ७ फरवरी की सबेरे से ८ फरवरी की सबेरे तक शक्तिपीठों-कार्यालयों पर सामूहिक अखण्ड जप की व्यवस्था बने, जिसमें जिसकी जितनी भागीदारी बन सके, की जाय। कितने समय बैठा जा सका यह अनिवार्य नहीं, समूह में थोड़ी देर की भी भागीदारी अनिवार्य है।

७ फरवरी की शाम को **नवयुग स्वागत दीपदान** की व्यवस्था की जानी है। यह पूज्यवर के आध्यात्मिक जन्म-दिवस की पूर्व वेला है। सायंकाल सूर्यास्त के बाद हर-घर में न्यूनतम पाँच दीपक पूजास्थली पर प्रज्वलित किये जाएँ। हर शक्तिपीठ-प्रज्ञापीठ-प्रज्ञामण्डल-गायत्री चेतना केन्द्र-नवचेतना विस्तार केन्द्र-जोनल एवं उपजोनल कार्यालय अपनी सुविधानुसार अधिक दीपकों की व्यवस्था कर सकते हैं। दीपयज्ञ के बाद उन दीपों को द्वारों पर-छतों पर दीपोत्सव पर्व की तरह सजा दें।

जहाँ भी सामूहिक जप का आयोजन हो, वहाँ कम से कम २४ दीपक प्रज्वलित करके सामूहिक रूप से २४ गायत्री मंत्र सस्वर सामूहिक पाठ करके दीप स्थापित किए जाएँ। शक्तिपीठों-मंदिरों-घरों पर रोशनी की जाय। अगला दिन वसंत पंचमी का है। शान्तिकुञ्ज या गायत्री तपोभूमि आकर इसे मनाने के स्थान पर सबको अपने स्थानीय स्तर का कार्यक्रम पूरे उत्साह के साथ मनाना चाहिए। अखण्ड जप के समापन के साथ ही यज्ञ द्वारा पूज्यवर को महामृत्युञ्जय मंत्र के साथ श्रद्धासुमन अर्पित किये जायें। उनका स्थापित यह अभियान निरन्तर बढ़ता रहे, उज्ज्वल भविष्य शीघ्र आए एवं युग का निर्माण सुनिश्चित रूप से हो, हम सब उसमें स्पष्ट भागीदारी कर सकें, यह प्रार्थना की जाय। इस प्रकार यह तीन दिवसीय आयोजन सभी को संपन्न करना है।

परिजन क्या करें- इस त्रिदिवसीय आयोजन में जन-जन की भागीदारी कराएँ। प्रत्येक नए परिजन को युगऋषि की युग निर्माण योजना से परिचित कर उन्हें अखण्ड ज्योति की ज्ञान गंगा से जोड़ें। छोटी पाकेट बुक्स से शुरुआत करें और उन्हें परम पूज्य गुरुदेव के विराट् ज्ञानशरीर का परिचय देकर गायत्री तीर्थ, शान्तिकुञ्ज हरिद्वार एवं गायत्री तपोभूमि मथुरा का आमंत्रण दें। विभिन्न धर्म सम्प्रदायों, अन्यान्य गुरुओं से जुड़े व्यक्तियों, जातीय वर्गों में उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना के प्रति उत्साह जगाएँ। यह परिवर्तन की वेला है। एक नए युग की शुरुआत है। इसमें सबकी भागीदारी होनी है। यह किसी धर्मगुरु की जन्मशताब्दी नहीं, विचार परिवर्तन के एक प्रबल-प्रवाह की सदी मनायी जा रही है, यह स्पष्ट करें। इसके लिए अखण्ड ज्योति, प्रज्ञा अभियान पाक्षिक के विगत चार माह के अंक पढ़ लें।

(३) नई दिल्ली में २० फरवरी को राष्ट्रीय स्तर पर श्रद्धाञ्जलि-यह कार्यक्रम अभी तैयारी की प्रक्रिया से गुजर रहा है। मूलत: यह राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एन.सी.आर.) एवं समीप के प्रान्तों के परिजनों के लिए आयोजित कार्यक्रम है। इस दिन रविवार है। कुछ चुने हुए विभिन्न नगरों-प्रान्तों के भी परिजन आमंत्रित किए जाएँगे। इसमें विशिष्टों की उपस्थिति के बीच लगभग चार घण्टे के कार्यक्रम द्वारा चुने जा रहे विशाल स्टेडियम में युग निर्माण योजना का विराट् रूप गुरुसत्ता की जीवनी के साथ दिखाए जाने की प्रस्तावित रूपरेखा बनी है। हजारों स्वयंसेवक गुरुदेव की जीवनी को प्रस्तुत कर एक मशाल का निर्माण करेंगे एवं सातों आंदोलन विभिन्न माध्यमों से रूप लेते चले जाएँगे। इसका सीधा प्रसारण राष्ट्रीय चेनलों द्वारा किया जाएगा। विशिष्ट आमंत्रित इसमें अपने विचार व्यक्त करेंगे। चूँकि इसी दिन आना व चले जाना है, अत: दूर से आने वाले व्यक्ति इस आयोजन में भागीदारी अपने-अपने स्थानों पर टी.वी. स्क्रीन लगाकर कर एवं करा सकते हैं। इसका विस्तृत प्रारूप आप अगले अंक में पढ़ सकेंगे। शेष आमंत्रितों के लिए अलग से पुस्तिका बनायी जा रही है।

(४) २ मार्च से १२ अप्रैल तक चलने वाले **शताब्दी साधना मंत्रलेखन अभियान** में भागीदारी। इसके लिए विगत अंक में पृष्ठ ५९-६० दिसम्बर २०१० में विस्तार से दिया जा चुका है। इसकी एक पुस्तिका बनकर तैयार है। मंत्रलेखन पुस्तिका भी विशेष बनाई गई है। अभी से पंजीयन करा लेना चाहिए। ये कार्य जोनल व उपजोनल कार्यालयों के माध्यम से संभव होंगे। यह एक अति पुण्यदायी-फलदायी साधना है। ऐसी वेला बार-बार आने वाली नहीं है। इस मंत्रलेखन साधना-महाअभियान का समापन हमारे शताब्दी सृजन साधना महापुरश्चरण की पूर्णाहुति के साथ १२ अप्रेल रामनवमी को एक साथ सारे देश में संपन्न होगा।

(५) इस वर्ष प्रबुद्ध वर्ग के बीच **ध्यान सत्रों के विशिष्ट आयोजन** वर्ष भर चलें। ध्यान को परम पूज्य गुरुदेव ने विशेष महत्त्व दिया। प्रतिदिन उन्हीं के स्वर में ध्यान ब्राह्ममुहूर्त में विगत पच्चीस वर्षों से निरन्तर होता आ रहा है, जिसमें सारे शिविरार्थी, आश्रमवासी भाग लेते हैं। ध्यान एक आकुल पुकार है परम सत्ता से-हमारे अंत:जगत के शोधन हेतु। यह एक समर्थ सूक्ष्म व्यायाम है, जिसमें हम जाने-अनजाने अशुभ का द्वार बंद कर शुभ का द्वार खोल देते हैं। अंतस् की क्षमता को जगाने विकसित करने की, सभी प्रकार के मनोविकारों की चिकित्सा पद्धति है—ध्यान। देवसंस्कृति विश्वविद्याय में इसे विज्ञान सम्मत ढंग से स्थापित किया गया है। चैत्र नवरात्रि के बाद स्थान-स्थान पर सेमीनार-वर्कशॉप द्वारा ध्यान सत्र आयोजित किए जा सकते हैं। इसमें पूर्व भूमिका में शताब्दी पुरुष के विषय में विचार व्यक्त कर प्रबुद्ध वर्ग को मिशन से जोड़ा जा सकता है।

(६) इस वर्ष गुरुपूर्णिमा पर्व १५ जुलाई शुक्रवार को है। इसे **विशिष्ट श्रद्धा समर्पण पर्व** के रूप में १५, १६, १७ जुलाई की तारीख में पूरे देश की शक्तिपीठों-प्रज्ञापीठों पर, जोनल-उपजोनल कार्यालयों पर मनाया जा सकता है। जिनको जब अनुकूल हो, इनमें भागीदारी कर अपनी-अपनी श्रद्धा की अभिव्यक्ति कर सकते हैं। पूरे विश्व में इसे १६, १७ जुलाई को मनाया जा सकता है। इसका विस्तृत प्रारूप अगले अंकों में पढ़ सकेंगे।

(७) हमारा जन्मशताब्दी वर्ष का प्रमुख कार्यक्रम ६ नवम्बर (देवोत्थान एकादशी) २०११ रविवार से कार्तिक पूर्णिमा १० नवम्बर गुरुवार की तारीखों में शान्तिकुञ्ज हरिद्वार-माँ गंगा के हृदय स्थल में संपन्न होगा। पहले की तारीखों (७ से ११) में

परिवर्तन किया गया है, ताकि इसका पूर्णाहुति कार्यक्रम कार्तिक पूर्णिमा की विशिष्ट वेला में संपन्न हो सके। देवोत्थान एकादशी के दिन विराट् कलशयात्रा निकलेगी एवं कार्यक्रम का शुभारम्भ हो जाएगा। ७, ८, ९ नवम्बर की तारीखों में विशाल श्रीरामनगर में महायज्ञ संपन्न होगा। प्रतिदिन विचार मंच, सांस्कृतिक मंच, ज्ञानमंच के आयोजन होंगे। लगभग ५० वर्गमील परिधि में पूरा मेला क्षेत्र होगा। ९ नवम्बर की शाम को चतुर्दशी की वेला में विराट् दीपयज्ञ होगा एवं १० नवम्बर को पूर्णाहुति के साथ ही सब अपने-अपने घर गुरुवर की चेतना के विस्तार का संकल्प लेकर चल देंगे। विस्तार क्रमशः आप पढ़ते रहेंगे।

(८) २८ जनवरी २०१२ शनिवार को **वसंत पर्व** पर सारे देश-विदेश में स्थान विशेषों से **मशाल जुलूस** निकलेंगे एवं युग परिवर्तन के नारों के साथ वे एक जनसभा में बदल जाएँगे। यह प्रक्रिया हर गाँव-कस्बे-नगर-महानगर में संपन्न होगी। ''इंकलाब जिन्दाबाद'' की तरह, 'वी' फॉर विक्ट्री की तरह ''हम बदलेंगे युग बदलेगा'' का नारा जन-जन के हृदय में स्थापित हो जाएगा। इसे २८, २९ शनिवार, रविवार के दो दिवसीय आयोजन का रूप भी दिया जा सकता है जिसमें सतयुग की वापसी पर कार्यशाला भी हो सकेगी।

यह एक संक्षिप्त विवेचना है इस अंतिम महत्त्वपूर्ण शताब्दी वर्ष के महाआयोजन की। अपनी-अपनी तैयारी करें। ऐसी वेला फिर सौ वर्ष बाद आएगी। चूक गए तो पछताएँगे। मिशन कई गुना विराट् होने जा रहा है। असमंजस से मुक्त हों और कूद ही पड़ें।

****